[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7607 **L**
Unique Paper Code : 2053100026
Name of the Paper : Raat Ka Reporter
Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi DSE**
Semester : VIII
Duration : 3 Hours
Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश.

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन की की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12 x 3 = 36

(क)

वह लायब्रेरी की तरफ चलने लगा। कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था-सिवाय उस डर के, जो वह सज्जन उसके पास छोड़ गए थे। सैंतीस साल की उम्र में उसने तरह-तरह के डर भोगे थे, लेकिन वे उसके भीतर थे और उन्हें टोहने के लिए उसे नंगी सड़क पर पीछे मुड़-मुड़कर नहीं देखना पड़ता था। किन्तु यह एक बिलकुल नए किस्म का डर था, जिसका मतलब किसी भी शब्दकोश में नहीं था। उसका सीधा सम्बन्ध उसकी जन्मपत्री से था, जो उनकी फाइलों में बन्द थी और जिसे वह कभी भी खोल सकते थे। वे सब निजी और प्राइवेट भेद, जिन्हें वह अब तक अपने अँधेरे में गुनता आया था, सहसा थिगलियों की तरह बाहर निकल आए थे... अपनी गन्ध और गन्दगी के साथ, जिसे कोई भी बाहर से देख सकता था, सूँघ सकता था।

(ख)

वह अपनी आँखें खोल देती, रिशी को एकटक देखने लगती, जो बरसों से उसका पति रहा था, जिसके लेख और रिपोर्ताज वह अखबारों में पढ़ती थी। कौन है यह आदमी ? कौन पाटी पर सिर टिकाए उसके पास बैठा है ? सफेद होते हुए बाल, सुर्ख और सूखी आँखें, बिना शेव किया हुआ चेहरा ? उसने चादर से हाथ बाहर निकाला और उसके बालों को सहलाने लगी-सबकुछ सूखने के बाद यह कौन-सा नाला है जो ऊसर में बहता है ? अँगुलियों के पोर खुलने लगते, भीतर तक ग्लानि-सी

उमड़ने लगती, अस्पताल की छुआछूत में माँ जी अपना घर-बार, रसोई-चौका छोड़कर मेरे पलंग पर बैठी हैं... अपने पर भयानक शर्म-सी आती; वह वहाँ से भाग जाना चाहती, छटपटाने लगती, अपने पति के सहलाते बालों को नोचने लगती, चीखने लगती; जब तक रिशी उसे दुबारा अपने में समेटकर बिस्तर पर नहीं लिटा देता, बिलकुल निश्चल और शान्त। पपड़ाए होंठ मुँद जाते, माथे की बिन्दी पसीने में बहती रहती, लम्बे रूखे बाल तकिए से खिसककर फर्श की धूल में लोटते रहते....

(ग)

"हम चलते हैं, आपकी सारी दुपहर खराब कर दी !"

"अगर आप नहीं आतीं, तो मैं आपके घर आता।" उसने कहा। झूठ बोलना कितना आसान है, जब उसकी कोई ज़रूरत नहीं। ज़रूरत ? वह उनसे पूछना चाहता था - आपको कोई ज़रूरत हो, तो बताइए... लेकिन बच्ची के सामने यह पूछना भी असम्भव लगा... अचानक मुझे खुशी हुई कि वे जा रहे हैं, कि कुछ मिनिटों बाद मैं उस दुनिया से छुटकारा पा लूँगा, जिसे अनूप भाई पीछे छोड़ गए हैं...पहली बार मुझे वह एक मरे हुए आदमी जान पड़े, वैसे ही, जैसे अस्पताल में बन्द उमा... कुछ लोग जीवित रहकर भी ओझल हो जाते हैं। हम जेल के बाहर बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे हों, या अस्पताल के गलियारे में- इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।

(घ)

सहसा वह रुक गया... क्या इस आदमी पर भरोसा किया जा सकता है ? कोई सबूत नहीं कि वह पुलिस का आदमी न हो जो सिर्फ मुझे टोहने आया था? मैंने उसे सिर्फ एक बार अनूप भाई के घर देखा था... अगर मुझ पर इतना ही सन्देह था, तो मुझे बस्तर जाने से पहले ही क्यों नहीं रोक लिया ? वे कम-से-कम मेरे घर की तलाशी तो ले सकते थे-क्या मालूम-ली हो ? माँ घर के एक कमरे में पड़ी रहती है और घर का दरवाज़ा खुला रहता है। वे कभी भी रात को आकर सारा घर छान सकते हैं और माँ को पता भी नहीं चलेगा... नहीं, नहीं... यह पागल होने का सबसे आसान तरीका है। अगर मैं इसी तरह अपने शकों और शंकाओं को तौलता रहूँगा, तो कहीं का नहीं रहूंगा........उसने अपना सिर डेस्क पर टिका लिया......

2. निर्मल वर्मा के लेखन पर आधुनिकता बोध के साथ-साथ पाश्चात्य शैली का भी प्रभाव है। समीक्षा कीजिए।

अथवा

निर्मल वर्मा की पत्रकारिता को केन्द्र में रखकर उनका साहित्यिक परिचय प्रस्तुत कीजिए।

18

3. 'रात का रिपोर्टर' बुद्धिजीवी की चेतना पर पड़नेवाले युगीन दबावों को रेखांकित करने वाला उपन्यास है। विश्लेषित कीजिए।

अथवा

'रात का रिपोर्टर' उपन्यास की कथावस्तु को प्रस्तुत करते हुए उसकी सामाजिक-राजनीतिक प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

18

4. 'रात का रिपोर्टर' को केन्द्र में रखते हुए निर्मल वर्मा के कथा-शिल्प में व्यक्त काव्यात्मकता को वर्णित कीजिए।

अथवा

'रात का रिपोर्टर' उपन्यास की भाषा, बिम्ब, प्रतीक और दृश्यात्मकता को व्यक्त कीजिए।

18

(400)